हिंदुस्तानी संगीत और गुरमत संगीत में अन्तर्सम्बन्ध

करनजीत सिंह*

संगीत एक विश्व व्यापक कला है। संगीत शब्द से अभिप्राय है सही ढंग से गाया गया गीत। संगीत दो शब्दों का सुमेल है सम + गीत। भारतीय संगीत का इतिहास बहुत प्राचीन है। लिखित रूप में संगीत की उपस्थिति के प्रमाण हमें वेदों में मिलते हैं। विभिन्न कालों के प्रभाव के बाद आज संगीत एक सर्वोच्च कला के रूप में स्थापित हो चुका है। भारतीय संगीत ने विकसित होते-होते नवीन आयामों को जन्म दिया। हिंदुस्तानी संगीत में प्राचीन समय से ही दो धाराएं बहती रही हैं। यह हैं मार्गी संगीत और देशी संगीत। देशी संगीत से अभिप्राय उस संगीत से है, वह संगीत, जिसका गायन देश की संस्कृति से प्रभावित हो। इस संगीत का गायन और वादन विभिन्न शैलियों के अंतर्गत होता है। मार्गी संगीत से अभिप्राय वह संगीत जो हमें धर्म के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करे। विष्णु नारायण भातखण्डे के अनुसार 'वह संगीत जिसकी खोज ब्रह्मा आदि देवताओं ने की और उसका प्रयोग भरत आदि मुनियों ने भगवान शिव के सामने किया तथा जो अभ्युदर देने वाला हो।'[1] श्री पाद बन्दोंपाध्याय के शब्दों में 'मार्ग संगीत वैदिक और प्राचीन समय का साम गान या भक्ति गान ही था। वही देशी संगीत जो इलाकों से प्रभावित संगीत है, वह बाद में हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत के रूप में उत्पन्न हुआ।'[2] इस कथन से यह कहना गलत नहीं होगा की मार्गी संगीत का सम्बन्ध देवताओं से और देशी संगीत का संगीत का सम्बन्ध हिंदुस्तानी शास्त्रीय से है। लगभग 12 शताब्दी में वैष्णव और शैव मत मानने वाले आलवरों और नायनारों द्वारा कीर्तन परम्परा का स्वतंत्र रूप में प्रचार किया गया। सिखों की प्रथम गुरु गुरु नानक देव जी ने सिख धर्म की नींव रखी। इसे प्रचार में लाने की लिए गुरमत संगीत की स्थापना की।

गुरमत संगीत हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत से प्रभावित है, जिसने आज अपना स्वतंत्र रूप ग्रहण कर लिया है। गुरमत संगीत में काव्य और संगीत दोनों स्वतंत्र रूप से विकसित हुए हैं। गुरु ग्रन्थ साहिब में दोनों का संयुक्त रूप में प्रचलित हुए। गुरमत संगीत के अंतर्गत गायन शैली के बिना वाणी अध्यन संभव नहीं हैं, क्योंकि गुरु ग्रन्थ साहिब में रचित ज्यादातर वाणी रागबद्ध हैं। श्री गुरु नानक देव जी ने धर्म के प्रचार के लिए शब्द कीर्तन को माध्यम बनाया। गुरमत संगीत की गायन शैलियों में बारामाह, घोड़ियां, अष्टपदि, अलाहूणियाँ आदि पूर्ण रूप से गुरमत संगीत से प्रभावित हैं। इन शैलियों के अध्ययन से हम गुरमत संगीत की शास्त्रीय और लोक गायन शैलियों को आसानी से विभाजित कर सकते हैं। गुरमत संगीत में राग के मुकाबले गुरबाणी को ज्यादा महत्व दिया गया है। गुरमत संगीत में प्रयोग होने वाले कई वाद्य भी हिंदुस्तानी संगीत से प्रभावित है जैसे दिलरुबा, इसराज आदि। इसी तरह गुरमत संगीत की हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत से बहुत सी समान्यताएँ हैं और कई मतभेद

1 पं विष्णु नारायण भातखण्डे, श्री मल्ललक्ष्यसंगीतम,पृ 8

2 Shri Padhopadhya, The Evolution of songs & Lives of Great Musicians, Pg-no-10-11

*शोधार्थी, पीएच.डी., संगीत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007, ई–मेल karanrubal@yahoo.com